International Journal of Research
*Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers*
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

# पण्डिता रमाबाई कालीन महिला सुधार आंदोलन

## (बंगाल और महाराष्ट्र के संदर्भ में)

**डॉ. एकता सिंह**

एचडीएक्स 16, किटियानी कालोनी, मन्दसौर (म.प्र.)

उन्नीसवीं सदी को स्त्रियों की शताब्दी कहना बेहतर होगा भारत में खासतौर से बंगाल और महाराष्ट्र में समाज सुधारकों ने स्त्रियों में फैली बुराईयों पर आवाज उठाना शुरू किया। इन दोनों राज्यों से ब्रितानियों का संबंध भारत के अन्य भागों की अपेक्षा पहले बना। स्त्रियों को शिक्षित करने के महत्व पर सबसे पहली सार्वजनिक बहस राममोहन राय द्वारा 1815 में स्थापित आत्मीय सभा द्वारा बंगाल में छेड़ी गई। उसी वर्ष उन्होंने एक भारतीय भाषा (बंगाली) में सती पर हमला बोलते हुए पहला लेख लिखा। 1818 में बंगाल के तत्कालीन प्रांतीय गवर्नर विलियम बैटिक ने प्रांत में सती प्रथा पर रोक लगा दी। सारे भारत में इस निषेध को फैलाने में 11 वर्ष लगे। विलियम बैटिक 1829 में जब भारत के गवर्नर जनरल बने तो उन्होंने सती निर्मूलन एक्ट पास किया।

रूढ़िवादियों के विरोध के आंशिक परिणाम के तौर पर कोई 10 वर्षो बाद भारतीय दंड संहिता में संशोधन किया गया। इस संशोधन में एक बार फिर स्वैच्छिक और जबरन सती में वैभिन्य दर्शाते हुए अपनी इच्छानुसार सती होने को कानूनी कवच प्रदान कर दिया गया। लड़कियों के लिए स्कूल सबसे पहले अंग्रेज तथा ईसाई मिशनरियों द्वारा 1810 में शुरू किए गए। स्त्रियों की शिक्षा के संबंधित पहली पुस्तक किसी भारतीय भाषा में 1819 में एक भारतीय गुरूमोहन विद्यालंकार द्वारा लिखी गई जिसके कलकत्ता की कन्या बाल समिति ने 1820 में प्रकाशित किया। 1827 तक मिशनरियों द्वारा हुगली जिले में 12 कन्या पाठशालाएँ चलाई जाने लगी, एक वर्ष बाद लेडीज सोसायटी फॉर नेटिव फीमेल एजुकेशन इन कैलकटा

एण्ड इट्स विस्निनिटी ने स्कूल खोले जो मिस कुक द्वारा चलाए गए। दलित ज्योतिराव फुले (जिन्हं प्यार से ज्योतिबा कहा जाता था) ने पूना में लड़कियों ने लिए अपना पहला स्कूल खोला। एक वर्ष बाद बम्बई शहर में ब्राह्मणों तथा गैर–ब्राह्मणों ने मिलकर परमहंस मंडली की स्थापना की। इसके सदस्यों ने जाति बहिष्कार के विरोध में अभियान चलाया। उसी वर्ष एल्फिन्सटन कॉलेज बम्बई के छात्रों ने एक कन्या पाठशाला शुरू की तथा स्त्रियों के लिए मासिक पत्रिका निकाली। 1852 तक फूले ने तीन कन्या पाठशालाएँ तथा अछूतों के लिए एक स्कूल खोला। ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने 1850 में विधवा पुनर्विवाह पर लगे प्रतिबंध को समाप्त करने के लिए अभियान चलाया और उन्होंने बंग्ला में एक पुस्तिका प्रकाशित की जिसमें कहा गया कि विधवा पुनर्विवाह शास्त्र सम्मत है। के.सी. सेन ने ईसाइयत से मुठभेड़ को भारतीय इतिहास का सर्वोत्तम क्षण माना उनकी कन्या पाठशालाओं में बंगाली साहित्य और ब्राह्मणों धर्म शिक्षा पाठ्यक्रम में अनिवार्य रूप से शामिल किये गए। जाने–माने मुस्लिम विद्वान एवं मुस्लिम समाज सुधार आंदोलन के प्रणेता सर सैय्यद अहमद खान का कहना था कि मुस्लिम औरतों को तालीम जरूर हासिल करनी चाहिए।

ब्राह्मण कन्या पाठशालाओं खासतौर से केशवचन्द्र सेन द्वारा चलाई जा रही कन्या पाठशालाओं में लड़कियों को खाना पकाने, सिलाई, कटाई तथा सेवा सुश्रूषा की शिक्षा दी जाती थी तथा इन कार्यो में प्रवीणता प्राप्त करने के लिए लड़कियों को प्रोत्साहन तथा पुरस्कार भी प्रदान किए जाते थें।

बंबई में बाल विवाह के विरूद्ध आंदोलन शुरू हो चुका था। पूना इस आंदोलन के प्रबल विरोध के केन्द्र के रूप में उभरा। समाज सुधार के विरोध का 1860 में शुरू हुआ अभियान 1870 तक पूना में अपने चरम पर पहुँच गया। रकमाबाई ने इंग्लैड जाकर एम.डी. की उपाधि प्राप्त की तथा भारत लौटकर काफी दिनों तक डाक्टरी की। सन् 1891 में तिलक ने सहमति आयु कानून (एज ऑफ कान्सेट एक्ट) के विरूद्ध आंदोलन का नेतृत्व किया जिसका असर इतना ही हुआ कि विवाह की उम्र 10 वर्ष से बढ़कर 12 वर्ष कर दी गई।

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

दीनबंधु ने युवा ब्राह्मण विधवाओं के मुंडन के विरोध का अभियान चलाया तथा नाइयों को यह काम करने से इनकार कर देने का सुझाव दिया। इसके परिणामस्वरूप बंबई के नाइयों ने एक बैठक में प्रस्ताव पारित कर निर्णय लिया कि अब वे भविष्य में ब्राह्ममण विधवाओं के सिर का मुंडन नहीं करेंगे। पूना के समाज सुधारक डी.डी. कार्वे ने 1908 में शहर के बाहर हिगने नामक स्थान पर विधवा आश्रम खोलने का निर्णय किया। किसी महिला द्वारा जन–अभियान के संचालन का पहला प्रयास ब्राम्हों समाज द्वारा 1890 में किया गया। कलकत्ता में पर्दा प्रथा के विरूद्ध जन–अभियान को शुरूआत करते हुए ब्राह्मण स्त्रियां शहर की गलियों में गाते हुए निकलती तथा जहाँ भी लोग इकट्ठा हो जाते वहीं पर वे उन्हें परदा प्रथा की बुराइयों के बादे में संबोधित करती। विधवा सुधार आंदोलन में एक नाम शिखर पर उभरा वह था डी.के. कार्वे जिन्हें महाराष्ट्र में विधवाओं के पुनर्वास अभियान का जनक माना जाता था।

पंडित रमाबाई ने जो कि स्वयं एक विधवा थी, विधवा मुद्दे पर सन् 1887 में छपी अपनी पुस्तक ''दि हाई कॉस्ट हिन्दू वूमन'' में ध्यान आकर्षित किया था तथा विधवाओं के लिए उनके द्वारा स्थापित शारदा–सदन टाल्सटाय के आत्मनिर्भर समुदाय के आदर्श की अवधारणा से प्रेरित था। 19 वीं सदी के पुरुष प्रधान महाराष्ट्रीयन रंगभूमि पर रमाबाई का, एक स्त्री का आगमन एक अनोखी बात थी। हजारों श्रृंखलाओं में वृहद स्त्री समाज में यह विद्रोहिनी अपनी पूरी ताकत, हिम्मत, लगन और प्रखन बुद्धि वैभव से चमक उठी। पूरा बचपन कठिनाईयों और संघर्ष से व्यतीत हुआ। इसी संघर्ष की आग ने रमाबाई को कुंदन की तरह दमका दिया। जिसकी चमक ने बेसहारा स्त्रियों की अंधेरी जिंदगी में एक उजाला फैला दिया। भारतीयों के लिए किंडर गार्डेन शिक्षा पद्धति और अंधों के लिए ब्रेल लिपि से परिचय करवाने का श्रेय रमाबाई को जाता है।

रोजगार मूलक प्रशिक्षण लड़कों और लड़कियों को देने की वकालात, राष्ट्र भाषा हिन्दी को बनाने की सर्वप्रथम सलाह, प्रथम भारतीय महिला जिसने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के बम्बई अधिवेशन में महिला प्रतिनिधि के रूप में हिस्सा लिया, 1895 मे पूना में फैले प्लेग रोग में सरकार द्वारा किये गये व्यवस्था से नाखुश होकर विरोध प्रकट करना, स्वदेशी आंदोलन में

हिस्सा लेकर देश में उत्पादित खादी के वस्त्रों को सारे जीवन अंगीकर करना, भारत में प्रथम महिला गृह की स्थापना, महिलाओं के लिये मेडिकल शिक्षा की पहल करना, हंटर कमीशन के सामने भारतीय महिलाओं में शिक्षा जागृति और स्कूल खोलने की पहल करना आदी कार्यो का श्रेय रमाबाई को जाता है।

रविन्द्रनाथ टेगौर ने 1889 में पूना में रमाबाई का व्याख्यान सुनकर पं. रमाबाई की तुलना 'सफेद गुलाब' से की थी।

**संदर्भ ग्रंथ –**

1. जुआना लेडले एवं रमाजोशी, डाटर्स ऑफ इंडिपेंडेस दिल्ली काली फार विमेन 1986, पृ. 27
2. एन.के. सिन्हा, द्वारा संपादित, हिस्ट्री ऑफ बंगाल 1757–1950, कलकत्ता 1967, पृ. 452
3. श्याम कुमारी नेहरू (सं.), आवर केस में कानेलिया सोराबजी का आलेख, द पोजीशन ऑफ हिन्दु विमेन फिप्टी ईयर्स एगों 1936, पृष्ठ 5
4. के.ए. निजामी, सैयद अहमद खान, प्रकाशन विभाग दिल्ली 1966, पृष्ठ 12
5. एस. नटराजन, द सेंचुरी ऑफ सोशल रिफॉर्म इन इंडिया एशिया पब्लिशिंग हाउस 1962, पृ. 86
6. सीतारामसिंह, नेशनलिज्म एण्ड सोशल रिफार्म इन इण्डिया 1858–1920 दिल्ली रंजीत पब्लिकेशन, पृ. 87
7. उमा चक्रवर्ती, कंडिशनस ऑफ बंगाली विमेंन एराउड द सेकेंड हाफ द नाईनटींन सेंचुरी कलकत्ता 1963, पृष्ठ 71